नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मौत का क्रूज : जिम्मेदारों पर हो कठोर कार्रवाई

बरगी डैम में हुआ यह दर्दनाक हादसा केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि लापरवाही, अव्यवस्था और जिम्मेदारियों से पलायन का जीवंत उदाहरण है. नौ लोगों की मौत और 15 लोगों का लापता होना किसी प्राकृतिक आपदा का परिणाम नहीं, बल्कि मानवजनित त्रासदी है, जिसे टाला जा सकता था. सबसे बड़ा सवाल यही है,जब मौसम विभाग ने 50 किमी प्रति घंटा की आंधी का स्पष्ट अलर्ट जारी कर दिया था, तो आखिर किसके आदेश पर क्रूज को पानी में उतारा गया ?

यह केवल एक निर्णय की चूक नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की विफलता है. 'सेफ नेविगेशन' जैसे बुनियादी सिद्धांतों की खुलेआम अनदेखी की गई. क्या पर्यटन विभाग और क्रूज ऑपरेटर के लिए यात्रियों की जान इतनी सस्ती है कि चेतावनियों को कागज का टुकड़ा समझ लिया जाए ? यह सीधे-सीधे आपराधिक लापरवाही का मामला बनता है. इसमें भी चौंकाने वाली बात यह है कि इनलैंड वेसल्स एक्ट, 2021 के स्पष्ट प्रावधानों के बावजूद अधिकांश यात्रियों को लाइफ जैकेट नहीं पहनाई गई. यह केवल नियमों का उल्लंघन नहीं, बल्कि जानबूझकर जोखिम को न्योता देना है. जो लोग लाइफ जैकेट पहने थे, उनके बचने की संभावना अधिक रही,यह तथ्य अपने आप में इस लापरवाही की गंभीरता को उजागर करता है. हादसे के बाद की स्थिति भी कम शर्मनाक नहीं रही. 'गोल्डन ऑवर' में बचाव कार्य सबसे अहम होता है, लेकिन यहां न पर्याप्त रोशनी थी, न तत्काल संसाधन. एनडीआरएफ को बाद में बुलाना पड़ा, जिससे कीमती समय बर्बाद हुआ. क्या यह मान लिया गया था कि हादसा हो ही नहीं सकता? अगर नहीं, तो फिर आपदा प्रबंधन की तैयारी इतनी कमजोर क्यों थी ?

सरकार ने त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए मुआवजे की घोषणा की और वरिष्ठ अधिकारियों को मौके पर भेजा,यह आवश्यक कदम है, लेकिन पर्याप्त नहीं. सवाल केवल राहत का नहीं, जवाबदेही का है. जब तक जिम्मेदार अधिकारियों, क्रूज ऑपरेटर और संबंधित विभागों पर कड़ी कार्रवाई नहीं होगी, तब तक ऐसे हादसे दोहराए जाते रहेंगे. यह भी जरूरी है कि इस घटना को एक 'केस स्टडी' की तरह लिया जाए और राज्य के सभी जल पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा मानकों की व्यापक समीक्षा की जाए. मौसम अलर्ट को अनिवार्य रूप से लागू करने, लाइफ जैकेट की उपलब्धता और उपयोग सुनिश्चित करने, और इमरजेंसी रिस्पॉन्स सिस्टम को मजबूत करने के लिए ठोस नीति बनाई जानी चाहिए. नियम केवल कागजों पर नहीं, जमीन पर दिखने चाहिए .सबसे महत्वपूर्ण बात कि इस हादसे को भूलने की गलती नहीं की जानी चाहिए. हर बार की तरह कुछ दिनों की चर्चा और फिर चुप्पी, यह सिलसिला अब खत्म होना चाहिए. जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके लिए न्याय केवल मुआवजा नहीं, बल्कि दोषियों की सजा है.

सरकार और प्रशासन को यह सुनिश्चित करना होगा कि बरगी जैसा हादसा फिर कभी न दोहराया जाए. इसके लिए कठोर कार्रवाई, पारदर्शी जांच और जवाबदेही तय करना अनिवार्य है. अगर इस बार भी जिम्मेदार बच निकले, तो यह केवल एक हादसे की विफलता नहीं, बल्कि पूरे तंत्र की नैतिक हार होगी.

पीएलआई योजना का परिवर्तनकारी प्रभाव

अविनाश जोशी

विभिन्न पीएलआई योजनाओं के बीच एक चमकता सितारा- उत्पादन पर आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना भारतीय अर्थव्यवस्था के 14 क्षेत्रों को कवर करती है। इनमें से, खाद्य प्रसंस्करण से संबंधित पीएलआई सबसे प्रभावशाली योजनाओं में से एक बनकर उभरी है. कुल पीएलआई सब्सिडी वितरण में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का हिस्सा मात्र 8 से 9 प्रतिशत ही होने के बावजूद, इसने तमाम पीएलआई योजनाओं के तहत सृजित किए गए कुल रोजगारों में से लगभग 42 प्रतिशत रोजगार सृजित किए हैं. अब तक, इस योजना के तहत कुल 2715 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि जारी की जा चुकी है. यह कुल परिव्यय का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा है. यह साबित करता है कि खाद्य प्रसंस्करण भारत के मैन्यूफैक्चरिंग इकोसिस्टम में सबसे अधिक रोजगार सृजित करने वाले क्षेत्रों में से एक है.

भारत आज अपने आर्थिक सफर के एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है. अब जबकि हमारा देश दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की दिशा में अग्रसर है, विकास को सिर्फ उत्पादन की मात्रा से ही नहीं, बल्कि हमारे द्वारा सृजित मूल्य के आधार पर भी मापना होगा. खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की तुलना में बहुत कम क्षेत्र ही ऐसे हैं, जहां इस प्रकार का बदलाव बिल्कुल साफ नजर आता है.

भारत खाद्यान्नों, फलों, सब्जियों, दूध और समुद्री उत्पादों के सबसे बड़े उत्पादक देशों में से एक है. दशकों तक, हमारे कृषि संबंधी सामर्थ्य ने देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की. फिर भी, इस उपज का एक बड़ा हिस्सा पारंपरिक रूप से बेहद ही सीमित मूल्यवर्धन के साथ सीधे खेत से बाजार तक पहुंचता रहा. आज भारत के कृषि उत्पादन का महज 12-13 प्रतिशत हिस्सा ही प्रसंस्करण से गुजरता है. उत्पादन और प्रसंस्करण के बीच का यही अंतर भारतीय अर्थव्यवस्था में उपलब्ध सबसे बड़े अवसरों में से एक है. इसलिए, खाद्यान्नों से जुड़ी भारत की यात्रा का अगला चरण बिल्कुल स्पष्ट है: कृषि की प्रचुर संपदा को उच्च मूल्य वाले एवं वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी खाद्य उत्पादों में परिवर्तित करना.

पीएलआई योजना के पीछे की परिकल्पना- इस अवसर को पहचानते हुए, भारत सरकार ने मार्च 2021 में कुल 10,900 करोड़ रुपये के वित्तीय परिव्यय के साथ खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए उत्पादन पर आधारित प्रोत्साहन योजना (पीएलआईएसएफपीआई) की शुरुआत की. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (एमओएफपीआई) द्वारा इस योजना को 2021-22 से 2026-27 तक की छह साल की अवधि के लिए लागू किया जा रहा है. इस योजना के पीछे का मूल विचार सरल लेकिन ठोस है: खाद्य प्रसंस्करण क्षमता, नवाचार और वैश्विक ब्रांडिंग के विस्तार में निवेश करने वाली कंपनियों को पुरस्कृत करना. कुल मिलाकर, यह योजना इन-स्टोर ब्रांडिंग, अंतरराष्ट्रीय खुदरा श्रृंखलाओं में शेल्फ स्पेस और वैश्विक विपणन अभियानों में निवेश करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करके भारत में खाद्य उत्पादन से जुड़ी वैश्विक स्तर की कई चैंपियन कंपनियां तैयार करती है.

रणनीतिक डिजाइन: एक आधुनिक खाद्य इकोसिस्टम का निर्माण उच्च क्षमता वाले खाद्य क्षेत्रों को प्रोत्साहन देना- पहला घटक पकाने के लिए तैयार (रेडी-टू-कुक) और खाने के लिए तैयार (रेडी-टू-ईट) खाद्य पदार्थ, प्रसंस्कृत फल और सब्जियां, समुद्री उत्पाद जैसी प्रमुख खाद्य श्रेणियों में उत्पादन बढ़ाने पर केन्द्रित है. ये श्रेणियां ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें भारत घरेलू खपत और निर्यात क्षमता, दोनों में तेजी से विस्तार कर सकता है. नवाचार और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की भागीदारी को प्रोत्साहन देना दूसरा घटक एमएसएमई द्वारा विकसित नवोन्मेषी और जैविक खाद्य उत्पादों को समर्थन प्रदान करता है. लघु एवं मध्यम उद्यम भारत के खाद्य क्षेत्र की रीढ़ हैं और समावेशी विकास हेतु आधुनिक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ उनका जुड़ाव बेहद जरूरी है.

पोषक अनाज (मिलेट) से संबंधित नवाचार: परंपरा को आधुनिक बाजारों से जोड़ना- वर्ष 2023 में, अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज (मिलेट्स) वर्ष के उपलक्ष्य में, मंत्रालय ने पीएलआई योजना के तहत एक विशेष पहल की शुरुआत की. इस पहल का उद्देश्य पकाने के लिए तैयार (रेडी-टू-कुक) और खाने के लिए तैयार (रेडी-टू-ईट) उत्पादों में मिलेट्स के उपयोग को प्रोत्साहित करना था. मिलेट्स जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी, अत्यधिक पौष्टिक और भारत की कृषि परंपराओं में गहराई से जुड़े हुए हैं. आधुनिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में मिलेट्स का समावेश करके, यह योजना पोषण संबंधी सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी कृषि को एक साथ बढ़ावा देती है.

बदलाव से जुड़े आंकड़े- पीएलआई योजना के तहत बहुत ही कम समय में हासिल की गई प्रगति उद्योग जगत की ओर मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया और इस नीति की प्रभावशीलता को दर्शाती है.

(लेखक खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के सचिव हैं.)

भारतीय संस्कृति में श्रम का सम्मान

वैदिक काल से ही श्रम के महत्व के रूप में व्यक्ति की प्रतिष्ठा

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू, शिमला

वैदिक ऋषियों की दृष्टि में श्रम का सम्मान था और श्रम के महत्त्व के रूप में व्यक्ति की प्रतिष्ठा थी .जो आर्थिक विषमताओं को नियंत्रित करने में सक्षम था.वैदिक ऋषियों के आर्थिक और श्रम सम्बन्धी दृष्टि को ही समाजवाद के तत्सम्बन्धी चिंतन का उद्गम स्रोत माना जा सकता है।भारतीय आदर्श ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यं जगत के अनुसार तो मनुष्य अपने को केवल धन का संरक्षक समझें और अपनी आर्थिक समृद्धि को समाज के साथ साझा ,बांट कर, दान वृत्ति से जीना चाहिए।भारतवर्ष की प्राचीन सनातन परम्परा का आदर्श तो विश्व में समाजवाद का सर्वोच्च कीर्तिमान स्थापित करता है.व्यक्ति की उन्नति और समृद्धि को उसकी आर्थिक संपन्नता, दिखावटी भोगवादी जीवन शैली से नहीं मापा जाता.एक स्वस्थ मानसिकता, स्वस्थ शरीर, सादा जीवन, सब से बांट कर जीना भारतीय आदर्श माना जाता था।

यही कारण है कि भारतीय समाज में प्राचीन काल से अपने धन को परमेश्वर की कृपा समझने की परम्परा रही है.वेदों ने इसी भाव को समाज में विकसित करने पर जोर दिया है.वेद के कई सूक्तों में इस प्रकार के निर्देश पाए जाते हैं.ऋग्वेद के प्रथम अध्याय का पाँचवाँ सूक्त इस पर ही केंद्रित है.यही सूक्त थोड़े परिवर्तन के साथ अथर्ववेद में भी आया है. आओ, आप सब प्रशंसनीय गुणयुक्त कार्य करने में प्रवीण विद्वानों से मित्रभाव से सब मिल कर परस्पर स्नेहपूर्वक शिल्प विद्या को सिद्ध करने में, एकत्रित हों, इंद्र के गुणों का उपदेश करें और सुनें कि जिससे वह अच्छी रीति से सिद्ध की हुई शिल्प विद्या सब को प्रकट हो जाए और उससे तुम सब लोग के सभी प्रकार के सुख प्राप्त हों. वेदों का आदेश है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कौशल को बढ़ाए.ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए समाज का विभिन्न प्रकार के कार्यों के ज्ञान का सामर्थ्य बढ़ाया जाए और प्राकृतिक प्रतिभाओं का विकास हो.इस पर ऋग्वेद के नौवें अध्याय के 112वें सूक्त में काफी विवेचन मिलता है.वहाँ यह भी बताया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रवृत्ति और रूचि भिन्न-भिन्न होती है, इसलिए उन्हें उनकी रूचि और प्रवृत्ति के अनुसार ही काम मिलना और करना चाहिए।आकाश से लेकर पृथिवी तक के सब असंख्य पदार्थों के साधक अत्यंत उत्तम वरण करने योग्य सद्गुणों को रचने में समर्थ, परन्तु दुष्ट स्वभाव वाले जीवों के कर्मों के भोग के निमित्त और जीवमात्र को सुख दुःख देने वाले पदार्थों के भौतिक गुणों का उपदेश करो.और जो सब प्रकार की विद्या से प्राप्त होने योग्य पदार्थों के निमित्त कार्य हैं, उन को उक्त विद्याओं से सब के उपकार के लिए यथायोग्य युक्त करो. सब पदार्थ विद्याओं के ज्ञान के उपयोग से निश्चय ही सुख प्रदान करने के लिए उत्तम समृद्धि के धन अन्न और आवागमन के साधन प्राप्त होते हैं. भौतिक पदार्थों और उनकी प्रक्रियाओं के सम्भावित दुष्परिणामों के रोकथाम के लिए सुरक्षा के साधनों का प्रचार करो.अनुसंधान के ज्ञान से उत्पन्न हो कर सुख समृद्धि के साधनों की नदियां बह चलती हैं.

संसार के पदार्थों के सुख को ग्रहण करने ले लिए विद्या आदि उत्तम ज्ञान से प्रेरित हो कर श्रेष्ठ अत्युत्तम कर्म करने वाले पूज्य जनों का अनुसरण करो. जीवन को सुखदायी बनाने के लिए तुझमें उत्तम व्याख्यान से ज्ञान तथा प्रशिक्षण से अतितीक्ष्ण बुद्धि और कर्मठ प्रवृत्ति जागृत हो. उन्नति के लिए उत्तम ज्ञान और उपदेश की शिक्षा द्वारा तुम सैंकड़ों काम करने का यश प्राप्त करो. संसार का समस्त भौतिक ज्ञान प्राप्त करके प्रकृति की असंख्य उपलब्धियों को सबके साथ बांट कर ग्रहण करो.राग, द्वेष, भेदभाव तथा स्वार्थ से प्रेरित हम अपनी वाणी और व्यवहार से किसी भी जीवधारी का शोषण और अहित न करें. कौशल विकास सभी मनुष्य भिन्न भिन्न प्रकृति के होते हैं.

भारतीय आदर्श सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार एक व्यक्ति केवल अपने निकट परिवार के लोगों से ही नहीं, बल्कि पूरे समाज, सब जीव जन्तुओं और प्राकृतिक तत्वों के साथ एक जीवित संबंध के अनुभव से प्रेरित है .ऋग्वेद में राजा और मंत्री को आर्यों के लिए सही उदाहरण स्थापित करने के लिए समय-समय पर बीज बोना और खेती करना चाहिए .यही उन्हें प्रशंसा का पात्र बनाता है .इसी भावना को प्रतिध्वनित करता है . कहा गया है कि राजा को ऋतु की शुरुआत में हल पकड़कर खेती शुरू करनी चाहिए .उन्हें दूध के लिए स्वस्थ गायों को भी सुनिश्चित करना चाहिए .ऋग्वेद में कहा गया है कि विद्वानों को भूमि जोतनी चाहिए .ऋग्वेद के संपूर्ण 4 .57 सूक्त में सभी के द्वारा खेती की महिमा का वर्णन किया गया है . ऋग्वेद में कहा गया है कि ऋषि यज्ञ करते हैं, सभी के लिए परोपकारी होते हैं, परिवहन विज्ञान में विशेषज्ञ होते हैं, ऊन के लिए भेड़ पालते हैं, ऊन से कपड़े बनाते हैं और कपड़े साफ करते हैं . यजुर्वेद 19 .80 फिर कहता है कि बुद्धिमान लोग विभिन्न प्रकार के वस्त्र बुनते हैं .

विमान सेवाओं के ठप होने का खतरा

घरेलू उड़ानों और विदेश जाने वाली उड़ानों के लिए एटीएफ की अलग-अलग दरें हैं. विमानसेवा कंपनियों ने इसे अव्यावहारिक बताया है और विमान ईंधन की एक समान दर रखने की मांग की है. सरकार के सामने प्रश्न है कि क्या वह कर ढांचे में सुधार करे या सीधी वित्तीय सब्सिडी दे.

भारत का उड्डयन क्षेत्र भारी संकट से जूझ रहा है. इसके पीछे मध्य पूर्व में भड़का युद्ध और ईंधन की कमी है. भारी घाटे में चल रही एयर इंडिया, स्पाइस जेट और इंडिगो ने चेतावनी दे दी है कि यदि सरकार ने ऐसे समय मदद नहीं की तो उनको कामकाज बंद करना पड़ेगा. एविगेशन टरबाइन फ्यूल (एटीएफ) के बढ़े हुए दाम की वजह से विमान उड़ाना रोकना पड़ेगा. विमानसेवा संचालन की 40 प्रतिशत लागत तो एटीएफ की रहती है. लंबी दूरी की उड़ानें इससे प्रभावित हो सकती हैं. यदि ऐसा हुआ तो पर्यटन, व्यापार पर बहुत बुरा असर पड़ेगा. आज हवाई सफर विलासिता नहीं, आम जनता की जरूरत बन चुका है. वह बुनियादी ढांचे के अंतर्गत आता है. भारतीय विमानसेवा संगठन ने नीतिगत विसंगति दूर करने की मांग की है. भारत में एटीएफ का मूल्य ढांचा एक समान नहीं है. घरेलू उड़ानों और विदेश जाने वाली उड़ानों के लिए एटीएफ की अलग-अलग दरें हैं. विमानसेवा कंपनियों ने इसे अव्यावहारिक बताया है और विमान ईंधन की एक समान दर रखने की मांग की है. सरकार के सामने प्रश्न है कि क्या वह कर ढांचे में सुधार करे या सीधी वित्तीय सब्सिडी दे. कीमतों में सुधार करने से वित्तीय जटिलताएं बढ़ जाएंगी. यदि सरकार समय रहते उचित कदम नहीं उठाती तो एयरलाइंस विमान उड़ानें रोक देंगी. इससे देशव्यापी असंतोष बढ़ेगा. पहले ही फ्लाइट की तादाद कम हो गई है और कब कैंसल हो जाएगी, इसका कोई भरोसा नहीं है. कनेक्टिविटी भी बुरी तरह प्रभावित हुई है. एटीएफ या हवाई ईंधन पर सर्वाधिक टैक्स भारत में लगाया गया है. इसे जीएसटी के अंतर्गत लाने की मांग भी लंबे समय से होती रही है. अब इस बारे में निर्णय लेना ही होगा. एटीएफ के बढ़ते दाम की वजह से हवाई किराया काफी बढ़ गया है. स्थिति बेकाबू हो जाए, इसके पहले निर्णय लेना आवश्यक है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

खेल के मैदान में भी कमाल पीएम मोदी ने खेला फुटबॉल

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खिलाड़ी-भावना या स्पोर्टसमैन स्पिरिट रखते हैं. उन्होंने सिक्किम की राजधानी गंगटोक पहुंचकर लड़के-लड़कियों के साथ फुटबॉल खेला. उन्होंने दिखा दिया कि वह सिर्फ राजनीति के फील्ड में ही नहीं फुटबॉल के मैदान में भी गोल मार सकते हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ब्राजील और बंगाल दोनों में जमकर फुटबॉल खेला जाता है. ब्राजील के मशहूर खिलाड़ी पेले को 'फुटबॉल का जादूगर' कहा जाता था. बंगाल में मोहन बगान और मोहमडन स्पोर्टिंग जैसी मशहूर टीमें हैं. बंगाल चुनाव के दूसरे चरण के पहले मोदी ने अपना फुटबॉल प्रेम जताकर मतदाताओं पर अच्छी छाप छोड़ी. यह देश के एकमात्र पीएम हैं जो फुटबॉल खेलते नजर आए. जब मोदी ने गोल मारा तो गोलकीपर भी भांप नहीं पाया कि बॉल कैसे भीतर घुसा. उसने एक तरफ डाइव लगाई और बॉल दूसरी तरफ से आ गया.'

हमने कहा, 'मशहूर फुटबॉल प्लेयर के नाम 'म' अक्षर से शुरू होते हैं जैसे कि माराडोना, मेस्सी ! इनमें आप चाहें

तो मोदी का नाम भी जोड़ लीजिए. यद्यपि गुजरात में नरेंद्र मोदी के नाम पर बहुत बड़ा क्रिकेट स्टेडियम है लेकिन उन्होंने फुटबॉल में भी अपनी कुशलता दिखाई.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह बताइए कि मोदी किस पोजीशन में खेलना पसंद करते हैं? सेंटर फारवर्ड, राइट इन, लेफ्ट इन, हाफ बैक या फुल बैक ? क्या वह गोल कीपिंग भी जानते हैं?'

हमने कहा, 'आप फुटबॉल का पुराना फॉर्मेशन बता रहे हैं. आजकल स्ट्राइकर और डिफेंडर जैसे शब्द ज्यादा प्रचलित हैं. राजनीति के समान फुटबॉल भी धक्का-मुक्की का खेल है, जिसमें प्रतिपक्षी को छकाते हुए पास दिए जाते हैं और किनारे-किनारे बढ़ते हुए गोल-पोस्ट की ओर तेजी से पहुंचा जाता है. राजनीति के समान फुटबॉल में भी मूव बनाया जाता है, किक मारी जाती है. मोदी का गोल विपक्ष मुक्त भारत बनाना है. इस दिशा में वह सेंटर फारवर्ड की तरह आक्रामक तरीके से बढ़ रहे हैं. बीजेपी ने किक मारी तो केजरीवाल की पार्टी टूटी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अमित शाह, किरेन रिजुजू और बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे की भूमिका क्या है?' हमने कहा, 'ये सभी संसद में मोदी के डिफेंडर हैं. मोदी की बजाय लोग रक्षापंक्ति बनाकर विपक्ष के हमले से सरकार को बचाते हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12246 - डॉ. सागर खादीवाला

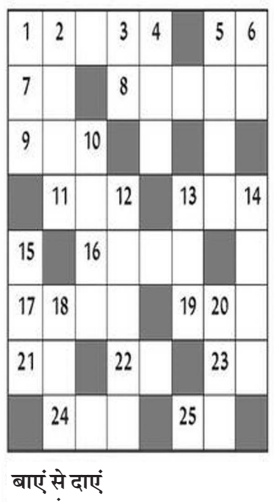

बाएं से दाएं

1. अंजनयुक्त, सुरमा लगा हुआ (सं.) 5. पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने का स्थान, खोज 7. त्वचा 8. इंद्रपुत्र जयंत का एक नाम (सं.) 9. नृत्य करना, प्रसन्नतापूर्वक उछलना कूदना 11. लीन होना, भोगविलास के निमित्त कहीं ठहरना, आनंद करना 13. एक कल्पित पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा स्वर्ण बन जाता है 16. नक्शा (सं.) 17. निमंत्रण देने वाला 19. शक्ति, बल, क्षमता 21. ऊंचाई 22. विवाह, ब्याह 23. परिणाम, नतीजा, वनस्पति का गूदेदार खाने योग्य भाग 24. साक्ष्य, साक्षी (उर्दू) 25. कपड़े आदि का निश्चित लंबाई का टुकड़ा

ऊपर से नीचे

1. क्रोध दिलाना 2. जल में रहने वाले जीवजंतु (सं.) 3. छाया, छांह, परछाई, घाघरे जैसा एक जनाना पहनावा 4. घर्षण, हलके घर्षण से उत्पन्न चिन्ह, भारी श्रम 5. पेड़ के सूखे हुए पत्ते 6. संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार, खिंचाव 10. केवल नाम के लिए 12. गुरुनानक के मत का अनुयायी 13. योग्यता (सं.) 14. सपाट, जिसकी सतह या तल बराबर हो 15. सिपाही, सेना का 18. धीरे

Solution 12245

चा	ह	क	■	भा	मि	नी	■
ला	ला	■	■	व	■	ल	व
क	ह	वा	सा	ना	■	कं	ज
■	ल	स	ना	■	प	ठ	न
अ	■	ना	■	■	र	■	■
व	क्त	■	च	र	म	सी	मा
रो	■	ना	प	■	धा	र	■
ह	ल	च	ल	■	म	त	ली

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ मेंशिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, आकस्मिक धन लाभ का योग है, वर्ष के मध्य में व्यापार में लाभ प्राप्त होगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में शारीरिक कष्ट होगा, मित्रों से व्यर्थ विवाद होगा, स्थानान्तरण का योग है, मानसिक तनाव में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ में मित्रों का विवाद हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियों का शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मानसिक तनाव रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील, हंसमुख मिलनसार होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, भूमि भवन मकान, आदि का सुख मिलेगा, नौकरी एवं व्यापार दोनों में अच्छी उन्नति करेगा, आय के एक से अधिक साधन प्राप्त करेगा, धार्मिक भावना कम रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

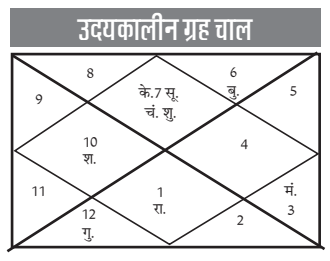

पंचांग

रा.मि. 12 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा शनिवासरे रात 11/4, विशाखा नक्षत्रे दिन-रात व्यतिपात योगे रात 8/46, बालव करणे सू.उ. 5/31, सू.अ. 6/29, चन्द्रचार तुला रात 11/11 से वृश्चिक, शु.रा. 7, 9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, आदि धातुओं में जोरदार तेजी होगी, आज के भाव सम रहेंगे, तेल में उठाव होगा, भाग्यांक 3773 है.

मेष- मित्रों से कहासुनी का मलाल रहेगा, अटकी योजनाएं फि से शुरू हो सकती हैं,सर्विस में जिम्मेदारी के कार्य होंगे, अधिकारियों का सहयोग बना रहेगा.

वृषभ- दौड़धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, विवाह की चर्चाओं में प्रगति होगी, संबंधों में निकटता आयेगी, यश मिलेगा. पारिवारिक सुख रहेगा.

मिथुन- पारिवारिक आयोजन प्रसन्नतादायक रहेंगे, जोखिम के कार्यों से दूर रहें, छोटी मोटी समस्याओं के समाधान के लिये प्रयास हितकर रहेगा .

कर्क- सार्वजनिक जीवन में मान सम्मान बढेगा, कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, संतान के संबंध में शुभ समाचार मिलेगा, नियमितता बनी रहेगी.

सिंह- किसी की सिफारिश से अटके कार्य शीघ्र बनेंगे, नाराज चल रहे लोगों को अभी मनाना मुश्किल होगा, पारिवारिक स्थिति को देखकर कार्य करें.

कन्या- दिखावे के कारण कर्ज की स्थिति बन सकती है, किसी विशेष व्यक्ति का सहयोग रहेगा, नियमितता बनी रहेगी, यश प्राप्त होगा.

तुला- नई जिम्मेदारी आने से आप परेशान हो सकते हैं, मांगलिक कार्यों पर विचार होगा, पुराने मित्र एवं रिश्तेदारों का अच्छा सहयोग मिलेगा.

वृश्चिक- कार्यक्षेत्र में विपरीत हालात का सामना करना पड़ेगा, किसी मूल्यवान वस्तु के गुमने से मन में दुख होगा,किसी रिश्तेदार के आने से के कारण व्यस्तता बढ़ेगी.

धनु- कामकाज में देरी से चिन्ता होगी, जल्दबाजी में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, रोजगार की दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा, व्यापारिक लाभ होगा.

मकर- धीमी शुरूआत के बावजूद कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता मिलेगी, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, समय देखकर कार्य करें.

कुम्भ- मेहमानों के कारण कार्यक्रमों में बदलाव की संभावना है, जीवनसाथी की चिन्ता रहेगी, कोर्ट कचहरी के कार्यों को अभी टाल देना लाभकारी रहेगा.

मीन- निजी कार्यों को टालने से समस्या बढ़ सकती है, नया घर खरीदने का मन बनेगा, व्यवसायिक योजना को बल मिलेगा, जोखिम भरे कार्यों से दूर रहें.

SUDOKU 7378

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7377

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8